

॥आगा० १९२५॥

॥श्रीरामविजय आयाप्रारंभः॥



"Joint President of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Parliament Member"

(2)

१७।।

श्रीगणेशायनमः॥ संतमेंडक्कैसलियोरा॥ वहस्पतिबैसेचतुरा॥ आलांसाहित्यसुमनाचेहा
 रा॥ गुंकोनगकांधालुत्याचें॥ १॥ अनछ्येशब्दकाशवंता॥ त्याचेग्रहिकचतुरपंडित॥ वि
 क्षेपरघुनाथभक्तविरक्त॥ त्रेमभरेतुक्तिम्॥ मतिमंदश्रोतावैसतांश्रवणि॥ तरियंथरसजा
 यवितक्कोनि॥ डैसेंभस्मामाजिनेउनि॥ यर्थवदानघलिङे॥ ३॥ रत्नपरिक्षाकरितिच
 तुरा॥ तेथें गर्भाधविटेसाचारा॥ गायनअेकतिपज्ञाननरा॥ परिक्षिरतेथेंविटति॥ ४॥
 कमळसुवासझेविभ्रमरा॥ परितेसुखवर्णाणदुर्दृरा॥ हंसयेतिमुक्तभाहारा॥ परितेंवका
 शिप्रासनहिं॥ ५॥ दुधहोरुननेतिर्दत्तरा॥ गान्धितेथेंअहोरात्र॥ परितयाहिप्राप्तस्थि
 रा॥ नेष्ठिरमतिमंदतो॥ धु॥ किंवसंतककिंकोकिका॥ पंचमआक्षिरसाका॥ समिपका १७॥
 गवसतिसक्का॥ परित्यांसहिरसनक्का॥ ६॥ बकाहकुर्गडेनाकरितगर्गनि॥ मयोरना

Re Raichade Somodhar Mandal, Dhule and Prof. Dr. V. N. Chavhan, P. G. Department of Sanskrit, Nashik.
 Prof. Dr. V. N. Chavhan, P. G. Department of Sanskrit, Nashik.

(२८)

चतिपुष्टपसरोनि॥ परिते कङ्काराषभानि॥ बोणिजे डैशिसर्वथां॥ ८॥ चकोरव त्रामतशोवि
 ति॥ परिते कङ्काकुः कुटबेणति॥ इषणनि श्रोतामंदमति॥ सहसाहिनभेटावा॥ ९॥ श्रोता
 भेटठिया चतुरा॥ ग्रंथरसमाजे अपारा॥ डैसविरसंघरतांथोरा॥ रणचक्रिं रंगभरे॥ १०॥ अ
 सोयकाहशजंति॥ चित्रकुटिराहिलारध्यपति॥ सुदूरोंगधर्वनिष्विति॥ कागरपेउथीर
 ला॥ ११॥ उपरिसिंहांव लोकनेभानां॥ श्रोता भासिकासिलकथा॥ दशलभारेशिभरधल
 लनां॥ चित्रकुटासमिपजाला॥ १२॥ भुथरअवतारा॥ चित्रकुटाखाले सोमित्र॥
 फकेंवेचितांदकभारा॥ गजरेंयेलांदेस्थिला॥ १३॥ धाकस्थिलाजापुलाध्वजसंकेल॥ आके
 कङ्कलेशत्रुघ्नभरत॥ इषणकैकेनपाठविलेयेथार्थ॥ वनिरधुनाथवधावया॥ १४॥ हेयुथा
 सज्जाउयेथ॥ हेजरिरधुपतिसकरं श्रवा॥ तरहेनुगोष्टजनुचिति॥ युध्यअज्ञतकरिनमि॥ १५॥

(3)

॥२॥

माद्यारामयेकं कावनि ॥ हेहद्वभारजालेसिथ्यकरोनि ॥ तरिडौसावणवाणगलावनि ॥ तैसें जा
क्षिनडौन्यहे ॥ १६॥ रविन्यकिर्णीवरिदेखा ॥ कैश्चाच्छतिपिः पलिका ॥ कं भाँलविजुमस्य
का ॥ कैशिगिठ्वेलनेणवे ॥ १७॥ घडोनष्टयाधिक्षिरिं ॥ पत्तेंगडेसाहत्यकरि ॥ उर्णनासि
च्यातंतुभीतरि ॥ वारणके साबांधवे ॥ १८॥ तप्पपापाणेकरन ॥ कैसाबांधवेलपंचानन ॥
द्विडेढासबिधरन ॥ कैशिनेईलजाकं ज्ञा ॥ १९॥ द्विपाचेंतेडेहरखोन ॥ कैसाजाइडेल
चंडकिर्णी ॥ तैसमिविरलक्षुमण ॥ कैसमिलिकेनयज्ञपावति ॥ २०॥ भारदेखोनसमिय ॥ क्षण
नलागलांचढविलेचापा ॥ वाणसेडितजमुपा ॥ सरव्येरहिततेकाकिं ॥ न्यावोटेशिगउगउ
तिव्याध्र ॥ भोकतिडौसेजजांचेभारा ॥ तैसेंसोकायक्रेहङ्कसमग्र ॥ भयातुरजाइले ॥ २१॥
त्याबाणाचेंकारावयनिवारण ॥ विरसरसावलाङ्गत्रुद्धा ॥ होधांचेंसमानसंथान ॥ वाणं

(३८)

बाणतोडिति ॥२३॥ येकचंद्रयेकमित्र ॥ किंरमावरजाणीउमावर ॥ येकमेरुयेकमोहर ॥
 युध्यालग्निसकङ्गे ॥२४॥ येकसमुदयेकनिराङ्ग ॥ येकहावग्नियेकवडवानङ्ग ॥ किंग
 हाजाणिं चक्रनिर्मङ्ग ॥ विकुआयुध्यंसितिति ॥२५॥ येकवासुगियेकभोगङ्ग ॥ येकवशिष्ठ
 येकविश्वामित्र ॥ लैसेशत्रुघ्नजाणिमामित्रमबाणसोडितिपरस्परे ॥२६॥ येकयेकावरि
 सोडिलबाण ॥ लैवरचावरिउडवितिसपुण्ग ॥ लैणेबाणमंडपजालसद्यन ॥ चडकिर्ण
 नहिसे ॥२७॥ रामनामेंविजांकिता ॥ बाणसुटलिनुलेजवंत ॥ रघुनाथनामेंगर्जेता ॥ सु
 साटतचयेतात्ति ॥२८॥ वाटवेडवठाप्रक्षयकाङ्ग ॥ सकङ्गवनचरांसुटलापङ्ग ॥ अष्टु
 ष्टरपङ्गलिसकङ्ग ॥ कडेवेदलीपर्वताच्च ॥२९॥ सांडोनियुंफालपञ्चरण ॥ पङ्गलिओ
 पुलेजिवधेतुन ॥ येकधांवलिधायादाहुन ॥ मुर्छायेतनपडतति ॥३०॥ येकहन्तिस

The Project Gutenberg EBook of
 Rāmāyaṇa, by
 Śāṅkaranārāyaṇa,
 Dhule and the
 Kashwāgar Chōhan
 Prabhu, with
 illustrations
 by
 P. D. M.

14311

येकहृष्णतिराक्षससकङ्ग॥ आलेरामावरितुंबङ्ग॥ यणोमखरक्षणिराक्षससकङ्ग॥ विसको
 टिनिवटिले॥ ३७॥ त्वैरस्मरोनिजंतरिं॥ सद्यहे जालेरायवावरि॥ आतां सौमित्रात्विकं
 चित्तरि॥ अनर्थनिर्धीरिं वोडवङ्ग॥ ३८॥ असो नुष्ठेश्वरसमस्त॥ आलेजेथेरयुनाथ॥ गो
 लिसांगतां बोबडिवङ्गत॥ संकेतदावित्येकसरो॥ ३९॥ येकदुरोनमारितिहाका॥ वैगंपङ्ग
 लित्रुषिकं व्यका॥ आतां युढविवरिं लपविका॥ रघुनायकाउठवेणि॥ ३५॥ नभरेजों अर्ध
 निमिष्य॥ तो चढविले श्रीरामेंथनुष्य॥ डो सात गवतों चंडांश॥ उंकेबाहुरलेविंआला॥ ३५॥
 ऋषिं सहणेऽयोध्याबाथ॥ तुष्टिमनि न रुचेदुष्यित॥ काळहिविष्वकरं जलिया
 यथार्थे॥ खंडविखंडकरिनवाणि॥ ३६॥ पउत्याआकाशादैननिधिर॥ रसातकाउवि ॥ ३॥
 जातां करिनस्ति र॥ तुष्टिसमस्तवेसाथरनिधिर॥ ब्रह्मचर्चकरितपै॥ ३७॥ अथवाकरावेवेदा
 ध्यायन॥

न्यायं मिसां सतारव्यज्ञान ॥ पातां जर्क अथवा व्याकरण ॥ हेच चर्चर्ची कराडि ॥ ३६ ॥ असोपारिशिदा
 लोनि ब्राह्मण ॥ पुढे चलिद्वार घुनेद्वा ॥ तो अवजनि क्हीं वो करिविना भस्थ ॥ लक्ष्मुमणापारिशिदा
 ज्ञानाथ ॥ इत्रुच्छ बापटाकितसें ॥ ३७ ॥ आपुत्रभेरिकारणें उक्तं रित ॥ सद्गहित जाता भर
 थ ॥ लक्ष्मुमणापारिशिदा ज्ञानाथ ॥ क्षणवलग नापा तदा ॥ ४८ ॥ मगर घणेसैमि त्राणि ॥ बारे भस्थ
 आठाभेरिशि ॥ तुं किं मर्थे द्याणि युथ्य करिता ॥ पाल्य मानशिं विचारोनि ॥ ४९ ॥ जैसें बोल
 तां राजिव नेत्र ॥ परिविरश्रीये ने वेष्टि कासैमि त्र ॥ तो सोडि तां बराहु चित्तार ॥ मगर घुविर का
 य करि ॥ ५० ॥ हृति चेंधनु घ्यहु रोनि ॥ श्रीराम ये तले लेचित्पणि ॥ सौमि त्र लागडा चरणि ॥
 हांस्य वहन करोनियां ॥ ५१ ॥ श्रीराम मैं वारि तां फणि पाळ ॥ अवदें विकले लेबाण जाळ ॥ जैसे
 निजज्ञान उसावतांता काळ ॥ मायाप क्षेत्र जविं विरें ॥ ५२ ॥ भरता सहित अयोध्या जन ॥

(48)

६

॥४॥

सर्विविलोकिलारघुनंदन ॥ जैशिनिशासंपत्तो चंडकिर्ण ॥ उदयाच्छिंविराजे ॥ ४५ ॥ तेऽमरथा
 शिनधरवेद्यिर ॥ त्रेमेंधांवधेतलिसत्तर ॥ वाटेशिसाष्टगनमस्कार ॥ वारंवारघटितसे
 ॥ ४६ ॥ किंवहुनदिवसमातागेलि ॥ तेबाघ्वसमिपदेशिलि ॥ किंगायवनिहुवपरतलि ॥
 वष्टेंजाटोपिलिधावेनियो ॥ ४७ ॥ किंह्विनाव्योदेश्वोनवरित ॥ धांवधेतज्जेसाशुथाक्रो
 त ॥ किंभागिरथिसमिपत्त्वाक्रांत ॥ जेविनावनउच्चकाकि ॥ ४८ ॥ किंसफङ्क्वेनिदि
 व्यह्म ॥ देपावतिज्जेसेविहंगम ॥ भरथेश्वानिवैसाचरम ॥ चरणसरोजिंस्पृशिला
 ॥ ४९ ॥ जैसालोभिजिवेधरिथन ॥ तैसभरयल्लधरिलेचरण ॥ नयनोदकेकरना ॥ केलें
 ह्वाघणरामपायं ॥ ५० ॥ मगउचलोनियांदोहिकरें ॥ वंधुशिहर्दृथरिलेजाहरें ॥ जैसा ॥ ५१ ॥
 जयंनपुत्रसहस्रनेत्र ॥ त्रितिकरोनिजालिंगिला ॥ ५२ ॥ किंह्विरसागरिंलहुरयाउवलि ॥

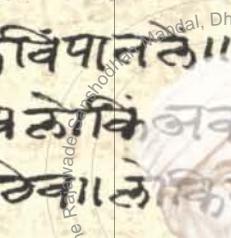
जैश्यायेकोतयेकमिक्ति ॥ किंवेहांतशस्त्रिन्यास्ति ॥ वैक्यायेलिपरस्परे ॥ ५२ ॥ जैसाभाले
 गिराभरथ ॥ तोशत्रुद्धलोटंगणघालिल ॥ परमप्रिनिरद्युनाथा ॥ भालगीततयाते ॥ ५३ ॥ स
 कृबजयोध्येच्चास्पण ॥ रामासभेटतिप्रित्तिनरवन ॥ सर्वदङ्भारत्रजाजन ॥ करिलिनमनरा
 माशि ॥ ५४ ॥ लक्षुमणभरथशत्रुद्धा ॥ परस्मेरदलिजालिगव ॥ मगसुमंतप्रथानेयेउव ॥ रामच
 रणवंहितसे ॥ ५५ ॥ मगसुमंतहृष्णरघुराय ॥ वेउवशिष्ठाणिजलियामाय ॥ तंवत्याहश
 रथकुळवर्या ॥ धीरनधरवेतेकाकिं ॥ ५६ ॥ माराचालिलारघुनंहन ॥ भोवेतेफारभयोध्या
 जणा ॥ जैसाकोवेहोनारायण ॥ अनेक श्रुलिनवशिला ॥ ५७ ॥ येउनियांवशिष्ठाजवक्ति ॥ रामे
 ऊरचरणवंहिलेभाकिं ॥ जैसेमहनदहनाच्चरणकमकिं ॥ स्कंदठेविमस्तक ॥ ५८ ॥ तोकौश
 आसुमित्रामाता ॥ त्यांचिंवहनेजवक्तिहेखलां ॥ समिपरघुनाथयेता ॥ उत्तरलिखालत्याहेविजणि ॥

(6)

८५॥

कौंशाल्ये चेवरणि मस्तक ॥ रेउनबो लेरघुनायक ॥ ह्यणे सुस्थिकिं मम जनक ॥ श्रीदशरथहयाव्य ॥
॥ ६ ॥ तों जालाय कचिक ल्होक ॥ रदन करि जनसकवा ॥ सुमित्रे कौंशाल्ये शिदुःखक ल्होक ॥
नाहिं पारतयातें ॥ ६ ॥ वशि एष्यणे रघुनाथा ॥ तुम्रवियोग न सहे दशरथा ॥ रामराम स्मरण
करितां ॥ मोहपंथा प्रतिगेता ॥ ६ ॥ औसव चन बोक तांकनि ॥ करणा सागर मोहदानि ॥ विम
कां बुधारा श्रवति नयनि ॥ तेष्यणि चलि ल्लामा ॥ ६ ॥ स्पृह स्पुद स्पुदो नविलापेथोरा ॥ पितयालग्नि
करि रघुविरा ॥ ह्यणे पुर्ण सत्ता चासागर ॥ ६ ॥ अविर ब्रतापि ॥ ६ ॥ ड्याचियुध्याचिरेव ॥
पाहा तां मानव लिई द्वादिहेव ॥ वृषपर्वा कुक्कारे मर्वा ॥ हैस्य युधिं तिं किङ्क ॥ ६ ॥ ओ तेह्यणति
नवक्येधा ॥ पुराण पुनरघुनाथा ॥ तोशो काणी विपडिठाहे मात ॥ असं मतदि सत्त्व से ॥ ६ ॥ जो ॥ ६ ॥
जगद्वेद्य जालागम ॥ जो कां विश्व विजफ कांकि तहम ॥ तो शो का कुछि लपर ब्रह्म ॥ पितया

लाग्निं कां हारा ॥६७॥ विषकृष्णके विभालासागरा ॥ उक्ताव्यपि रोहिणिवरा ॥ नागभुषितम् इ^१
 णिवरा ॥ सर्पबाधाके विजालि ॥६८॥ चितामणि के विहरि इन्द्रव्यपि ता ॥ कल्पवस्तु के विनिर्फळजा
 ला ॥ प्रदयग्नि चेतोंका ॥ अंधत्वके विपालन ॥६९॥ वकोहेतप्रत्योतरा ॥ श्रोतेहृष्मेकाजिसाद
 रा ॥ पुर्णब्रह्मानंदरघुविर ॥ प्रानवकोविजवसरला ॥७०॥ जगद्गुरु जोहेवाधिदेव ॥ परिहावि
 मायालाघव ॥ अवतारकारणचिठ्ठेव ॥ लोकवनवाहिला ॥७१॥ नटजोजोधरिवेश ॥ वरि
 संयादणि करिविशेष ॥ यालग्निं जगद्वात्मा ॥७२॥ त्युरुष ॥ दविजावेशसमयाच्च ॥७३॥ औशि
 उदीउत्तांशब्दमांदुस्य ॥ उपग्रहिक श्रोतपादवस्ततोष ॥ निःसंदेहनिःशेष ॥ डेविनमनासे
 सुर्योर्दई ॥७४॥ किंवैराग्येनिरसेकाम ॥ किंज्ञानेवितक्तेविभ्रम ॥ डैसानिधानात्तुनपरम ॥
 दारणसर्पस्तनिधाला ॥७५॥ करित्तांसंशयाचेनिवारण ॥ मांगरहितेऽनुसंथान ॥७६॥ तरि



(X)
॥८॥

येगोष्टि श्रीसदुष्पण ॥ सर्वथानवेवते ॥ ७५ ॥ यासामाजिलागलाहरक ॥ तोकाढावयालागेवेक ॥
किंबनध्यायामाजिरसाळ ॥ वेहाध्ययनराहिले ॥ ७६ ॥ चोरवाटचुक्कवावयापुणे ॥ अधिक
लागलायेकहिन ॥ तरितेगोष्टि सदुष्पण ॥ कहांसज्जाननवेविति ॥ ७७ ॥ रात्रिमाजिसक्कमैरा
हाति ॥ परिसुर्यउगवतांसवेच्चालति ॥ घयेसपायिकबैसति ॥ परिसवेच्चिज्ञातिनिजमार्ग ॥
॥ ७८ ॥ समुद्राचेन्नरतेवोहुटे ॥ सवेच्चमार्गुलविडापदोटे ॥ किंचपक्कलुरंगचपेटे ॥ विसावाघेउ
नमागुलि ॥ ७९ ॥ तेविं परिसापुढिलक्खाधि ॥ ठउनिपिताहडारथ ॥ शोकाकुक्किलजनक
ज्ञामात ॥ क्षणयेकजाहाला ॥ ८० ॥ मगवद्विरहाणशीरमा ॥ प्रयागाग्रतिज्ञाउनिगुणग्रामा ॥
उत्तरक्रियाकरोनिनिजधामा ॥ हडारथाद्विकोळविडो ॥ ८१ ॥ कितेकप्राप्तकविबोलता ॥ ॥ ८२ ॥
जेपलनिपउलाहडारथ ॥ हेगोष्टि बसंपत ॥ बोलतां अनर्थवाचेडि ॥ ८३ ॥ ज्ञाचेनावघेतां आवडि ॥

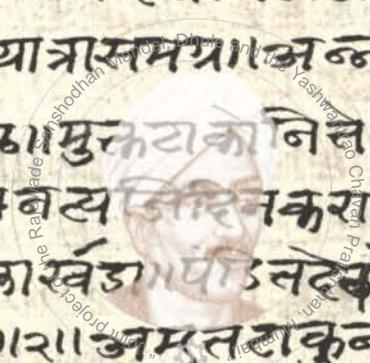
जिवउधरविलक्षकोडि॥तोभापुत्रपितापत्ननिपटि॥काढत्रैंदेवेजा॥८३॥असोप्रथागाम
तियेउन॥उत्तरक्रियासर्वसारन॥पित्यात्रतिनिजपर्दैस्थापुन॥जालेपरतोनचित्रकुटा॥८४॥
सकङ्कत्रूषिजाणिअयोध्याजन॥बैसलेश्रीगमशिष्येषुन॥माभरथेद्यालोनिलोटांगण॥
करडोलुनिउभागकला॥८५॥हणेज्ञयजयमुराणयुरघातमा॥मायाचक्रचाढकापरब्रह्म॥
विरचिजनकाशिवविश्रामा॥मंगढधामरथुराया॥८६॥हेरमकरणासमुद्रा॥हेरवि
कुठटिककाराधवेद्वा॥सर्वानंदनारामन्त्रं इ॥त्रवापरद्राजगद्गुरु॥८७॥हेरमरावणर्दर्प
ह्यरणा॥हेरमभवहृदयमोत्तना॥हेसनकसञ्जनमावसंजना॥निरंजनानि रोपाधि
का॥८८॥हानवकावनवैश्वानरा॥ममहृदयारवींहृत्रमरा॥अज्ञानतिमिरछेदकदिवा
करा॥समरथिरासवैश्वा॥८९॥हेरमभक्तचाहुकलक्ष्मरा॥त्रेमठन्त्रकोरवेद्यकंचद्वा॥

(8)

॥७॥

संसार गङ्गेदक्षमगदा ॥ अनंगमोहनाबनेगा ॥ ९० ॥ उपवाशिं मरतांचकोरा ॥ याचेधां
वण्याधां वेडेविन्चद्र ॥ किं बावर्षणपउत्तां जठधरा ॥ चातकरलगिं आवेपै ॥ ९१ ॥ किं चिं ता
क्रोतासन्नितामणि ॥ सां पउपुर्वपुण्ये करण्डा ॥ किं हीरद्वयाचेबांगणि ॥ कलरू ह्लुग
वडा ॥ ९२ ॥ किं पति ब्रतेसप्राणबाथभेटला ॥ किं लुधि तां पुढेस्तिराव्यिआला ॥ किं साध
काशिनिधि झोडला ॥ आबंदजालासैसाजामा ॥ ९३ ॥ हुं सेंदेस्तिलामानससरोवरा ॥ किं
ब्रेमकाभेटलाउमावरा ॥ किं संकल्पिद्वय नवरा ॥ दुख्कळज्ञात्मणादिघले ॥ ९४ ॥ तेसाला
बंदजालामानशि ॥ आतांसत्वरचलविभवाइयशि ॥ सांभाकावेंबंधुज्ञात्मांशि ॥ श्रीद
शरथाचेनिव्याये ॥ ९५ ॥ आपुलेंराड्यसांभाकावे ॥ गोज्ञात्मणाशिप्रतिपाक्षवै ॥ आमुचेम ॥ ९६ ॥
नोरथपुरवावे ॥ आतांपरतावेसत्वर ॥ ९७ ॥ लननिभामन्तिपरमचतुरा ॥ मजदेतहोतिराड्यभार ॥

जैसें छेदुनियां शिरा ॥ एहं गीयां सपुत्रा बोधि लिः ॥ १७ ॥ पुञ्च मुर्ति वो सं उन ॥ जैसे गुरवा चेथ
 र जै चरण ॥ राज कुमर वर सां उन ॥ नवरि दिधलि अजरहका ॥ १८ ॥ पाड़े निदे वाचंशि स्वर ॥
 यात लाभो वत आवार ॥ नाग उन यात्रा समग्रा ॥ अन्न उत्र घास ले ॥ १९ ॥ फण सटा को नि
 रसा ढ ॥ प्रिति नें घन लें कनक फड ॥ मुकुटा को निच जाढ ॥ उं जौशि घेत लि ॥ २० ॥ गर
 घेउ बटा किला हिरा ॥ अंधकार घेउ वस्त्र लिह न करा ॥ पाच मिर का उनि स त्वरा ॥ काच ब
 केरस्ति लि ॥ २१ ॥ परि सटा कुन घेत लाख डा ॥ पाड़न देह नी आणि लावेड ॥ चिंता मणि गोफ
 ए उन रोक डा ॥ पलां डुघे त बके चि ॥ २२ ॥ अमुल टा कुन घेत लें कांडिं ॥ कन्म इ मतो डुन ला
 विलि भाजि ॥ कामधे नुस्त्र जुन सह जिं ॥ अजा पुजि जाहरे ॥ २३ ॥ निज सुख टा कुन घे
 त लें दुःख ॥ कस्तु रिटा कुन घेत लि राख ॥ सो नेटा कुन सुर ख ॥ शोण जैसे घेत लें ॥ २४ ॥



१

।८॥

सांडुनियांरायकैंके॥आहरेरहिलिभर्किफैंके॥ज्ञानसोडुनघेतलें॥अज्ञानखबरेंवि
 ॥५॥तैसेंकैकैनेकैठेसाच्चार॥वनाहवडोनिजगदोथार॥मजब्बावयाराजभार॥सीध्य
 जालिसोक्ष्यपें॥६॥सर्वअपराधकरोनिशमा॥ज्ञयोध्येशिचलवेश्रीरामा॥याउपरिज
 गदामा॥कायबोलिलाभेकातें॥७॥सुर्यमार्गचुक्करैलाभ्रमण॥नेत्रिंबंधखयावे
 अग्ना॥मश्यकान्धिडकलागोन॥ज्ञानसक्षयपडेळा॥८॥पाषाणप्रहरलागोन॥जरिवा
 शुपडेसोडोन॥किपिःपलिकाशोप्रिस्थुलिवना॥विजेसधांवोनमश्यकधरि॥९॥
 भड॥भटिलभग्निलाळा॥जरिकपुरतुसारहोयशितळ॥हेंहिहोईलयेकवेळ॥परि
 वचनाशिचन्नकेमाझ्या॥१०॥येकबाणयेकवचन॥येकपलीत्रतपुर्ण॥चौहावर्षे
 भरलियाविण॥केदापिभागमनघडेना॥११॥ज्ञेसेनिश्चयाचेंवन्नन॥बोलताजा
 लारघुनंहन॥दुरवावलेभरताचेमन॥जाहाकेजग्निजेसुमनडैसें॥१२॥८॥

।९॥

(११)

मगभरथ्येचेतविलाजातवेद ॥ त्राणदावयाजालासिथ्य ॥ हृषेहादेहकरिनहथ्य ॥ रामविद्यो
 गमजनसोसवे ॥ १३ ॥ मगमाहंराजवाल्मीकि सुनि ॥ भरथाशियेकांतिंनेउनि ॥ मुक्तकान्या
 र्थअवधाकानि ॥ भविष्यार्थेसांगिलला ॥ १४ ॥ लंजैकलोकैकसुन ॥ उगचरणहिलानिंवो
 ता ॥ मगउठेनजनकजामाता ॥ हृदईधरि भरसोते ॥ १५ ॥ आपुल्याहस्तेकरन ॥ पुशिलेभरथा
 चेनयन ॥ करेकुर्बांडिलेवहन ॥ समाधानवरितसे ॥ १६ ॥ देवबंदिचेसोउडन ॥ चौहांव
 रखायेतोपरलोन ॥ मगवरहहस्तेउचलुन ॥ भादहिधिलिभरथाते ॥ १७ ॥ चौंवरपेंचौदाहिन ॥ १८ ॥
 पंथरावेदिवशिंपुर्ण ॥ माध्यानायेईलचंडकिठा ॥ भटजयेउनलुडलगि ॥ १९ ॥ भरथहृषेनेम
 टकलां ॥ मगहेहत्यागिनतत्वता ॥ रामचरणिठविस्तातांमाधा ॥ त्रेमजवस्त्ताभाष्यिक ॥ २० ॥
 भरथमागुलाउठेन ॥ विलोकिश्रीरामाचेवहन ॥ अमछहतरातिवनयन ॥ तैसाचहृदई

(१०)

रेखिता॥२०॥ भरथ बोले सद्गवचन॥ मिथ्योध्येशिनवजायपरतोन॥ सकळमंगळस्ना
 न॥ यजुनरहिननेहिग्रामि॥२१॥ अवश्यह्नणेरघुनायक॥ मणिमयपादुकासुरेख॥ भ
 रथासहिधन्याशोकहारक॥ येरेमस्तकिंवंदिल्ला॥२२॥ शिवमस्तकिंविराजेचंड॥ त्वैशा
 शिरिंपादुकाहिसति सुंहरा॥ शोकहारपत्तासमग्रा शितक्षारिरजाहात्तें॥२३॥ डौसेंकरिं
 धरिलांनामसारा॥ शितक्षालालाअर्पण॥ त्वात् सात्रेमळभरथथोरा॥ अंतरिं पुर्णनिवा
 ल॥२४॥ इत्रुद्धासह्नणेरघुनाया॥ तुंआणवथावसुमंत॥ राजभारचालवावासमस्त॥
 यथान्यायेकरोनियां॥२५॥ सदाशेवावेसतजन॥ श्रीगुरभजनिसावधान॥ हुरत्यागवे
 दुजेन॥ त्याचेंअवलोकनकरावे॥२६॥ परदाराजाणियरथन॥ येथेकहानठेविजेमना॥२७॥
 वेदमर्यादानुष्ठाविपुर्ण॥ त्रालानातहिजालिया॥२८॥ साथुसंतगेब्राह्मण॥२९॥

"The Rajavade Gopodharabandhu and the Yashwantrao Chavan Panchmukhi Mundis"

१०४

यांचेसदाकरावेंपाळण॥सकळदृष्टासदवउन॥स्वधर्मपुर्णराखावा॥२८॥जीरक्लेश
 काळपातडाबहुत॥परिथर्यनसांडावेयथार्थी॥एरभजनयुण्यपंथ॥नसोडावासर्वथा॥
 ॥२९॥कथाकिर्तनश्रवणपुराण॥काळजमावायणकरन॥आपुलावणीश्रमपुर्ण॥सर्व
 थाहिनसांडावा॥३०॥संतांचानकरयामानसगा॥हीरभजनशिङवावेजाग॥सोउन
 सकळकुमारे॥समार्गचिवत्तीवें॥३१॥ चेआशिर्वादद्यावे॥वर्मकोणांचेनबो
 लावें॥विश्वअवघेंजाणावें॥आत्मस्वरपनिशीरे॥३२॥सत्संगधरावाआधि॥नायकावि
 हुर्जनचिकुधि॥कामकोधादिकवादि॥हमावनिजपराक्रमे॥३३॥मिजालेंसज्जान॥हि
 नधरावाअभिसान॥विनोहेपराचेहेळण॥नकरावेंसहसाहि॥३४॥शमहमादिकसा
 थनें॥हुरनकराविंसाथकानें॥जनजालिजेभाडवाटेवें॥यांमार्गहविजे॥३५॥क्षणेक

(11)

॥१०॥

जाणो न संसार ॥ सांडा वाविष्य वरि लभात् ॥ सद्गुर वन्ननिं सादर ॥ विलस होरि विडे ॥ ३५ ॥
 शोक मोहा चेन्न पेटे पुर्ण ॥ भाँगि भाद्रति येउव ॥ विवेक कोडण पुढे करन ॥ जान इस्त्रयोजा
 वें ॥ ३६ ॥ काम क्रोध मद मठर ॥ हेयहायेउ बद्याने न स्कर ॥ आयुष्य कणि क जाणो नि संसार ॥
 सारा सार विचार वें ॥ ३७ ॥ है वेजा लें शायथार ॥ शा-चार गर्व न धरा वाजणु मात्र ॥ येक हां
 च गेले समग्र ॥ कहां धिर न सांडा वाप ॥ कै पत्राह्ल लया निधान ॥ वर्षत स्वाति म
 ज क पुर्ण ॥ तेसु मंत भरथ शत्रुघ्न ॥ कर्ण सुलिख ल सांग विलि ॥ ३८ ॥ शब्दा मृत वर्षे राम चं
 द ॥ निवाले भरथ कर्ण च कोर ॥ किं राम वन न दूर सागर ॥ उपमन्य सा-चार भरथ तेथे ॥ ३९ ॥
 सुर्य उगवतां निसैर तम जाढ ॥ तैसें श्रीराम वचने चोखळ ॥ मग भरथ परतो नि ता ल्काठ ॥ ३१ ॥
 नंहि ग्रामिंशहि ला ॥ ४० ॥ करन माते चै समाधान ॥ सकळ ब्राह्मण त्रजा जन ॥ सुमंत अणि शत्रुघ्न ॥

"Jointly with Sardhan Madder, Dilip and the Yashoda Chavhan
 Member"

॥४०॥

(11A)

गेलेपरतोनभयोध्ये ॥४३॥ श्रीरामपादुकसिंहासनि ॥ शत्रुघ्नेवरिष्ठत्रथरनि ॥ मगरा
जम्बा-चालविभन्नदिनि ॥ नामस्मरणिसावधि ॥४४॥ क्षणह्यणायेतनंदिग्रामशि ॥ माणुता
जातभयोध्येशि ॥ सकृदपृथ्विस्याराजाशि ॥ आक्षरथशत्रुघ्नाचा ॥४५॥ त्रितिसंवष्टु
रिंकरभार ॥ भुपाक्षदेत्तसमग्र ॥ असानेत्रि श्रामिविरभरथ ॥ निर्बिकारक्षेस
ला ॥४६॥ नंदिग्रामाङ्गवक्तवरंप्रयाता ॥ पर्णदृष्टिकरनराहित्वाभरथ ॥ श्रीरामपादुका
विराजता ॥ रत्रदिवसमस्तकि ॥४७॥ डेखावत्तेश्रीरामभक्त ॥ तेहिभरथावैसेविरक्ता ॥
कामकमिनियहसुत ॥ त्यागकरनवैसला ॥४८॥ वटदुम्धेजटावकुनि ॥ सकृदमंगव
ओगस्यजुनि ॥ वन्धुलेवेष्टन्त्वणासनि ॥ वैसलेध्यानिरामाच्च ॥४९॥ नक्षत्रांतौसाच्चे
द्रा ॥ तैसामध्येभरथसाच्चार ॥ रत्रदिवसरामचरित्र ॥ भरथसंगेसमस्तांते ॥५०॥

१२

८७॥

किंकामानससरोवरिं॥ वैसतिराजहंसन्चियाहारि॥ भरथाज्ञोवत्यात्माचूपरि॥ वेष्टनियां
 वैसले॥ ५६॥ श्रीधरहृषेश्रोतयांसमस्तां॥ वितव्यावेषुडीतियाश्कोकार्था॥ रघुनाथन्ति
 त्रकुटिंजसतां॥ कायकथावर्तीति॥ ५७॥ कवित्तिंशब्दरूपंमादुस्॥ उघडतांपंडितपाविति
 संतोष॥ ईवरकुमतिमतिमेहासा॥ रघुपरिक्षानककेहे॥ ५८॥ असोच्चित्रकुटिंजसतांर
 घुनंदन॥ मिठोनवहिर्मुख्यंबाह्यण॥ हृषीतिरामाखुजायेशुन॥ आत्मासर्विद्धयेतत्तु
 हृष्णिनि॥ ५९॥ तुश्चिरुद्गीपरमसुंदर॥ व्यवयामपत्तियैंजसुरा॥ वाल्मीकिभाव्यसा
 चारा॥ औसेचिअसेजाणपां॥ ५१॥ वनिहुनवानीआलिसा-चारा॥ त्रिशिरादुष्पणभाणि
 स्वरा॥ दक्षारयेथेयेषारा॥ तुजकरितांरघुविरां॥ ५३॥ हृषेनिविष्णेयेतिनुजयाति॥ १५॥
 येशुनजायेनिश्चयेति॥ नाहुंतरिआत्मिंभाश्रमाति॥ त्यागुनजाउनिधीरे॥ ५४॥ ४५॥

"The original manuscript page number is 151. The text is written in Devanagari script, with some characters in red ink. There are several red ink marks and annotations throughout the text, particularly on the right side. A large red ink mark covers the middle of the page."

॥आगा० १९२॥

(१२८)

श्रीरामघणे ब्राह्मणा लागुनि ॥ तुम्हिं निश्चिन असावें अंतः कर्णि ॥ मिकाळहि कोडिन समरं
गणि ॥ राहस सगणि कोप्पत्तेयें ॥ ५८ ॥ परम अविश्वासि ब्राह्मण ॥ ज्ञाणति येथें विद्धें येति दा
रण ॥ हाआपुलिस्विराखेल पुर्ण ॥ किं बाह्या लग्नि रस्तिलहा ॥ ५९ ॥ हात्यांशि न पुरेसम
रं गणि ॥ व्यारकं डिजाति लसरेनि ॥ यात्र वो लाचा विश्वास धरन ॥ कदायेधेन राहू
वे ॥ ६० ॥ मगस कठिं करो निये कवि चार ॥ रात्रि चउगो न समग्र ॥ कुटुं वेघे उनि साचा
रा गेठेविप्रपठेनि ॥ ६१ ॥ उपरित्रातः करावृ डाजा ॥ श्रीरामयाहु क्रमिजन ॥ लंबतेरा
त्रिच्यगेलेपकोन ॥ राजिवनयन कायकरि ॥ ६२ ॥ येकवाल्मि कउत्तरलापुर्ण ॥ डोमा
हांराजलयोधन ॥ भुतभविष्य वर्तमान ॥ त्रिकाळज्ञान जयाशि ॥ ६३ ॥ वायुसंगेउडेत्ते
ण ॥ परिज्ञ चक्न संतिस्थान ॥ किं रणमंडक संडुन ॥ रण बुरजै सायचेना ॥ ६४ ॥

Joint Project of Sahayadri Mandal, Dhule and the
Gangwantra Chavhan Sahayadri Mandal,
Mumbai

(13)
१९२।।

तेसावान्निकउवरमाजाण॥ लेणें अधिचकथिलेगमायण॥ ईतरबहुमुख्यं ब्राह्मण॥
समनिधाननोकरवलि॥ ६५॥ प्रत्ययानयेतारघुनिरा॥ जान्वारलिनकाजानाचार॥ कर्मते
चित्रमथोर॥ पिशाच्चनरतेचपै॥ ६६॥ लेणेकेलेवेदपठन॥ करतकामद्वास्त्रभ्रमाण
परितेमद्यपियाच्चेभाषण॥ राघविञ्चारणविच्छार॥ ६७॥ डेशिमुग्धावलिसलक्षण॥
परमसुंदरस्त्रातुर्यरसाणि॥ परिमनजाहिपति मजनि॥ लरिसर्वहिवृथागेले॥ ६८॥
स्वरदृष्टिशिचंदनहेख॥ परिनेणेचोसुवास सुख्ख॥ षड्विस्त्रिफिरविजेहरविपक॥
परिस्वाहनेणेतो॥ ६९॥ हृषानकरितोशिवरा॥ कायसाव्यर्थतव्यविचार॥ त्याचेंजा
नेनकेकरकरा॥ डेसेविरबनुवादति॥ ७०॥ लेणेकेलेन्निर्थोटण॥ होयचतुःषष्ठि १९२॥
ककाप्रविष्ण॥ लेणेकेलेजेकिर्तन॥ लेजाणगायनगोरियांचे॥ ७१॥ असोरघुपतिससांडुनिवि
त्र॥

पकोनगोडेसमया॥ जगदंदरघुविरा॥ त्याचेंस्वरूपनेणोनिया॥ ७२॥ आत्मांजासोबहुत
 जाषण॥ श्रीधरामवित्रकुटल्यागुन॥ वाल्मीकि त्रुपिसनमुन॥ हंडकारंण्याचालिला॥ ७३॥
 रामविजयग्रथभरवंड॥ येथें संपलेंवयाघाकोउ॥ आत्मांभरण्यकांडवचंड॥ सुरस
 असेबहुतपुढे॥ ७४॥ रामविजयश्चिरसागरा॥ इषांतरबेनिघतिबापार॥ संतशोतेनि
 झीर॥ जगिंकारोतसर्वदां॥ ७५॥ ब्रह्मानहरवेकुक्कभुषणा॥ श्रीधरवरदाशिताजि
 वना॥ पुढे अरण्यकांडरचना॥ बोलावै नाच येथुनि॥ ७६॥ रामविजयग्रथसुहरा॥ स
 मेतवाळीकनाटकाथार॥ सहापरिसोतमकचतुरा॥ दादझोध्यायगोडहा॥ ७७ ॥०॥



॥श्रीरामचित्त यज्ञस्थान
शमाध्यायस्मास॥



"Joint Project of the Rajadhe Sansodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Distilition, Mumbai"

11671

(14)

11671



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com